मन को मजबूत बनाना है तो इच्छाओं को खत्म करो

दादी जानकी

ड्रामा के रहस्य को समझने से, अपने आपको जानने से जो दुःख और विनाशी सुख मिला है, वह खींचता नहीं है। बाबा समझानी देते हैं कि हर आत्मा का अपना-अपना पार्ट है। दूर देश में रहने वाला बाप आ करके हमारी बुद्धि को दूरादेशी बनाते हैं जिससे सब दुःख मिट जाता है। जैसे बेहद का बाबा हमको ड्रामा के आदि मध्य अन्त का ज्ञान समझाते हैं, ऐसे हमारी बुद्धि जब हदों से निकलती है तब बाबा कहता है कि यह हमारा दूरादेशी बच्चा है। बाप को समझने और बीज को जानने से हम ड्रामा को अच्छी तरह से समझते हैं।

बीज़ के द्वारा ही हमको सारा गुह्य रहस्य-युक्त ज्ञान समझ में आया है, जिससे हम समझदार बनते हैं। जितना बाबा ने हमको समझदार बनाया है उतना हमारा सोचना भी बदल गया और जहाँ से दुःख मिला है वह याद नहीं रहता। इसलिए बाबा कहते कि सभी की विशेषता को देखो क्योंकि बाबा हर एक की विशेषता को देख याद करता है। जो बच्चे अपनी विशेषता को नहीं जानते हैं तो बाबा उनको याद दिलाते हैं। हर एक में विशेषता है, बाबा आ करके आत्मा को पहचान देते हैं कि बच्चे तुम्हारे में यह विशेषता है उसको इमर्ज करो। देखा गया है कि बाबा जैसी दृष्टि और कोई में नहीं है, वह हमको देख करके विशेषता की याद और स्मृति देता है। बाबा का बोलना, देखना और उनके सम्बन्ध में आना माना सत का संग लगना। एक बाप ही सत है, वह अपनी शक्ति हमारी विशेषता में भरते हैं जिससे हम वर्सा लेने के लायक बनते हैं। स्मृति आयी है कि हमको वर्सा लेना है इसलिए वर्सा लेने में आलस्य नहीं होता। बाबा कहते हैं कि आलस्य और अलबेलेपन को छोडो, पढाई को अच्छी तरह से पढो और पढाओ। तोते के मुआफिक नहीं पढो लेकिन बाबा जो श्रीमत देते हैं उसको अमल में लाओ।

हम स्वयं में मनोबल कैसे भरें? मन रावण के अन्दर बहुत दबा हुआ था जिससे मन कमजोर बन गया है। अब अन्दर से जागृति और स्मृति आयी है इसलिए हम बाबा से शक्ति खींच सकते हैं, जिससे रावण के चम्बे से निकलना सहज होगा। बाबा ने हमको समझाया है फिर बाबा की मदद से रावण के चम्बे से निकलना माना अपने में बल भरना, फिर भी माया छोड़ती नहीं है इसलिए महारथी बन चैलेन्ज करना है। मनोबल है कि समझ की शक्ति हमारे काम में आये। बल अन्दर तब भरता है जब मन में कोई प्रकार का संशय नहीं है। मन को और ही बल मिलता है क्योंकि बल काम करता है और निश्चय मजबूत बनता है। अगर इच्छा खत्म है तो मन मजबूत है क्योंकि कोई भी इच्छा मन को कमजोर बनाती है, मन उसके वश हो जाता है। जब इच्छा मर गयी है तो मन को बल आपेही मिलता है क्योंकि संकल्प ही नहीं चलता, जो मेरे कल्याण के लिए होगा, जो सेवा अर्थ होगा। निश्चय का बल काम करता है। याद रहे, इच्छा मात्रम् अविद्या। इच्छा क्यों रखें? इच्छा है सम्पूर्ण बनने और घर जाने की, न सिर्फ घर जाने की तैयारी करनी है लेकिन घर जाने के लिए हम तैयार हैं। बाप से मिलन मनाने की इच्छा सूक्ष्म है और आत्माओं का परमात्मा से सम्बन्ध जोड़ने की शुभ भावना देते हैं कि वह सम्बन्ध सदा जुटा रहे। हम एक दो के सहयोगी और सच्चे होने से यात्रा में साथी हैं, इसलिए मनोबल अपने में भरते हैं, मन कमजोर नहीं होता क्योंकि याद, सेवा और ईश्वरीय परिवार को हम छोड़ने वाले नहीं हैं। दूसरा - यह मेरा परिवार है जितना बडा परिवार उतनी खुशी और मनोबल बढ़ता जाता है।

तीसरा है सेवा, सेवा कोई नौकरी की तरह नहीं है। संकल्प से भी सेवा है तो स्वप्न में भी सेवा है, सेवा माना संग का रंग लगाना। जैसे भ्रमरी मेहनत करती है ताकि फल अच्छा निकले। तो हमको क्या करना है, वृत्ति शुद्ध है तो वायब्रेशन अपने आप सबको मिलते हैं। वृत्ति को शुद्ध और श्रेष्ठ रखना मेहनत नहीं है। जितनी रूहानियत होगी उतनी राहत में रहेंगे और जितना बाबा से मिली हुई प्राप्ति से सम्पन्न हैं, उतना दातापन के संस्कार बनेंगे इसलिए हमको सिर्फ सम्पन्न रहना है। अन्दर कोई कमी न रहे जो हम बाबा का नाम बाला न कर सके। हमको अपने ऊपर अटेन्शन रखना है, औरों का चिन्तन नहीं करना है क्योंकि चिन्तन करना मेरा काम नहीं है। शुभ चिन्तन में रहना मेरा काम है, उसमें मेरा भला है। जिसको ड्रामा का राज़ पता है वो अपने को पावन बनाने की गुप्त मेहनत करते हैं और बाबा उन्हों को मदद करता है। जितना हमारा कनेक्शन बाबा से गहरा है उतना बाबा अनेक आत्माओं को नज़दीक ले आयेगा. हमने नहीं खींचा लेकिन बाबा ने हमको साथ दिया. साथ-साथ मनोबल भरा। मनमनाभव

में मध्याजीभव भरा है। जिसमें निश्चय है वो माया से कभी हार नहीं खायेंगे। कितना भी नीचे ऊपर करे वो माया के बहुरूपों को जानने वाला है। अपने को बचा करके, बाबा से सच्चे रह करके मायाजीत बनते हैं। सच्चों को मायाजीत बनने का बल मिलता है। जितना छुपाते हैं, जितना अलबेले रहते हैं, माया भी उसका फायदा लेती है, चाहे अभिमान वश या किसी भी वश होते हैं। जो सोचते कि क्या, कैसे होगा वो माया के वश हैं इसलिए सच्चाई की शक्ति से कमियों को खत्म करना है। सच्चाई पर भगवान बलिहार जाते हैं। सच्चाई से हम सदा खुश और मायाजीत रहते हैं। फिर है प्रकृतिजीत, प्रकृति ही ५ तत्वों का शरीर और दुनिया है। हम यह कह नहीं सकते कि शरीर कैसा है लेकिन हमारे लिए अच्छा है, प्रकृति साथ देती है। अभी ड्रामा में आत्मा को सतोप्रधान बनाने का पार्ट है, तत्वों और सभी को पावन बनाना है। आत्मा जिसमें बैठी है उसको भी सतोप्रधान बनाना है, उसका असर फिर प्रकृति पर होगा। अपनी नेचर को चेन्ज करना है और दूसरे की नेचर के प्रभाव में नहीं आना है। हमारी नेचर इतनी सुन्दर और इतनी प्युअर हो जो प्रकृति भी पावन बन जाये। बाबा हमारी बुद्धि में नॉलेज अच्छी तरह से भरता है जो हर समय काम में आये इसलिए संस्कार और स्वभाव प्रकृति के अधीन न हो।